

म्युचुअल फंड एवं शेयर बाजार में निवेशक व्यवहार

डॉ. चांदनी मिश्रा

अतिथि विद्वान-वाणिज्य विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

सारांश:(Abstract)

यह शोध पत्र म्युचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेशकों के व्यवहार का विश्लेषण करता है। भारतीय संदर्भ में, निवेशक व्यवहार विभिन्न कारकों जैसे जोखिम सहनशीलता, रिटर्न की अपेक्षा, भावनात्मक पूर्वाग्रह और बाजार की अस्थिरता से प्रभावित होता है। अध्ययन से पता चलता है कि म्युचुअल फंड में निवेशक विविधीकरण और पेशेवर प्रबंधन को पसंद करते हैं, जबकि शेयर बाजार में प्रत्यक्ष निवेश अधिक अनुभवी निवेशकों द्वारा उच्च रिटर्न की तलाश में किया जाता है। हालांकि, व्यवहारिक पक्षपात जैसे डिस्पोजिशन इफेक्ट और हर्डिंग निवेशकों के निर्णयों को प्रभावित करते हैं, जिससे बाजार प्रदर्शन पर असर पड़ता है। यह पत्र साहित्य समीक्षा, द्वितीयक डेटा और उपलब्ध अध्ययनों पर आधारित है, जो निवेशकों को बेहतर निर्णय लेने में मदद कर सकता है। अध्ययन का उद्देश्य निवेशक व्यवहार के पैटर्न को समझना और सुझाव देना है ताकि निवेशक अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। कुल मिलाकर, निवेशक व्यवहार बाजार की दक्षता और व्यक्तिगत सफलता दोनों को निर्धारित करता है।

कीवर्ड्स:(Keywords)

निवेशक व्यवहार, म्युचुअल फंड, शेयर बाजार, जोखिम सहनशीलता, रिटर्न, व्यवहारिक पूर्वाग्रह, विविधीकरण, बाजार अस्थिरता, भारतीय निवेशक, हर्डिंग प्रभाव।



परिचय: (Introduction)

निवेश की दुनिया में निवेशक व्यवहार की भूमिका-

निवेश एक ऐसा क्षेत्र है जहां व्यक्ति अपनी बचत को बढ़ाने के लिए विभिन्न विकल्पों का चयन करते हैं। म्यूचुअल फंड और शेयर बाजार दो प्रमुख निवेश माध्यम हैं जो भारतीय निवेशकों के बीच लोकप्रिय हैं। म्यूचुअल फंड निवेशकों के समूह से धन एकत्रित कर विभिन्न संपत्तियों जैसे शेयरों, बॉन्ड्स और मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करता है, जबकि शेयर बाजार में निवेशक सीधे कंपनियों के शेयर खरीदते हैं। निवेशक व्यवहार इन दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। भारतीय शेयर बाजार, जैसे बीएसई और एनएसई, में निवेशक व्यवहार अक्सर भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक कारकों से प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, बाजार की तेजी में निवेशक अधिक उत्साहित होकर निवेश करते हैं, जबकि मंदी में घबराहट में बेच देते हैं। म्यूचुअल फंड में, निवेशक एसआईपी (सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) के माध्यम से नियमित निवेश पसंद करते हैं, जो जोखिम को कम करता है। यह अध्ययन निवेशक व्यवहार के विभिन्न पहलुओं जैसे जोखिम प्रबंधन, रिटर्न अपेक्षा और बाजार प्रभावों का विश्लेषण करता है।

विषय की प्रासंगिकता -भारत में म्यूचुअल फंड उद्योग तेजी से बढ़ रहा है, जहां एसेट अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) 2025 तक लाखों करोड़ रुपये तक पहुंच गया है। इसी तरह, शेयर बाजार में रिटेल निवेशकों की संख्या बढ़ी है, लेकिन कई निवेशक व्यवहारिक गलतियों के कारण नुकसान उठाते हैं। उदाहरण के लिए, डिस्पोजिशन इफेक्ट जहां निवेशक लाभदायक शेयर जल्दी बेच देते हैं और हानिकारक शेयर लंबे समय तक रखते हैं। यह पत्र इन पैटर्न को समझने का प्रयास करता है ताकि निवेशक बेहतर रणनीति अपनाएं। भारत में रिटेल निवेशकों की संख्या में तेज वृद्धि हुई है। 2025 में नए निवेशकों में 56% से अधिक 30 वर्ष से कम उम्र के युवा थे। हालांकि, एसईबीआई के 2025 इन्वेस्टर सर्वे के अनुसार, लगभग 65% रिटेल निवेशक जोखिम से बचने वाले (risk-averse) हैं और वे म्यूचुअल फंड तथा एसआईपी को प्राथमिकता देते हैं।



प्रत्यक्ष शेयर निवेश में भावनात्मक पूर्वाग्रह जैसे हर्डिंग (भीड़ का अनुसरण), ओवरकॉन्फिडेंस, डिस्पोजिशन इफेक्ट (लाभदायक शेयर जल्दी बेचना और घाटे वाले शेयर लंबे समय रखना) और लॉस एवर्शन (नुकसान से डरना) आम हैं, जिससे कई निवेशक बाजार की अस्थिरता में नुकसान उठाते हैं।

2025 में विदेशी निवेशकों (FII) ने रिकॉर्ड ₹1.6 लाख करोड़ की निकासी की, लेकिन घरेलू निवेशकों ने बाजार को संभाला। म्युचुअल फंड में रिटेल भागीदारी बढ़ी, जहां एसआईपी ने 97% सफलता दर दिखाई, भले ही बाजार में उतार-चढ़ाव रहे। यह दर्शाता है कि व्यवहारिक अनुशासन (जैसे नियमित निवेश) बाजार टाइमिंग से बेहतर परिणाम देता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

- म्युचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेशक व्यवहार के प्रमुख कारकों की पहचान करना।
- व्यवहारिक पूर्वाग्रहों का विश्लेषण करना।
- भारतीय संदर्भ में निवेश पैटर्न का मूल्यांकन करना।
- सुझाव देना कि कैसे निवेशक अपने व्यवहार को सुधार सकते हैं।

साहित्य समीक्षा:

विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि निवेशक व्यवहार बाजार प्रदर्शन को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, एक अध्ययन में पाया गया कि म्युचुअल फंड निवेशक जोखिम कम करने के लिए विविधीकरण पसंद करते हैं। दूसरे अध्ययन में, भारतीय म्युचुअल फंड बाजार में निवेशकों की अपेक्षाएं और जोखिम लेने की क्षमता का प्रभाव देखा गया। शेयर बाजार में हर्डिंग व्यवहार, जहां निवेशक दूसरों का अनुसरण करते हैं, सामान्य है।



अनुसंधान पद्धति: (Research Methodology)

अध्ययन का प्रकार- यह अध्ययन द्वितीयक डेटा पर आधारित है, जहां विभिन्न शोध पत्रों, वेबसाइटों और रिपोर्टों से जानकारी एकत्रित की गई है। प्राथमिक डेटा के बजाय, साहित्य समीक्षा और उपलब्ध अध्ययनों का उपयोग किया गया है क्योंकि विषय व्यापक है और मौजूदा शोध पर्याप्त हैं। डेटा स्रोत: शोध पत्र- SSRN, ResearchGate, Atlantis Press आदि से प्राप्त पेपर। वेबसाइटें: Bajaj Finserv, Jagran, PersonalFN, Sanskriti IAS आदि से हिंदी सामग्री। अन्य: YouTube, Reddit से निवेशक अनुभव।

विश्लेषण विधि: वर्णनात्मक विश्लेषण का उपयोग किया गया है, जहां निवेशक व्यवहार के पैटर्न को वर्गीकृत किया गया। उदाहरण के लिए, म्यूचुअल फंड में निवेशकों की धारणा और व्यवहार को चिह्नित करने के लिए सांख्यिकीय डेटा (जैसे रिटर्न दरें, जोखिम स्तर) का उपयोग। तुलनात्मक विश्लेषण म्यूचुअल फंड बनाम शेयर बाजार के लिए। कोई प्राथमिक सर्वेक्षण नहीं किया गया, लेकिन उपलब्ध अध्ययनों से निष्कर्ष निकाले गए।

सीमाएं:

अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीयक डेटा पर निर्भर है, इसलिए वर्तमान बाजार परिवर्तनों को पूरी तरह कवर नहीं कर सकता। भारतीय संदर्भ सीमित है, वैश्विक तुलना कम।

मुख्य निष्कर्ष और चर्चा: (Main Findings and Discussion)

म्यूचुअल फंड में निवेशक व्यवहार:

निवेशक म्यूचुअल फंड को कम जोखिम वाला मानते हैं क्योंकि इसमें विविधीकरण और पेशेवर प्रबंधन होता है। अध्ययनों से पता चलता है कि निवेशक एसआईपी पसंद करते हैं, जो बाजार अस्थिरता से बचाता है। हालांकि, फीस और नियंत्रण की कमी नुकसान हैं। कोविड-19 के दौरान, निवेशकों ने अधिक सुरक्षित डेब्ट फंड चुने।



शेयर बाजार में निवेशक व्यवहार: शेयर बाजार में निवेशक उच्च रिटर्न की तलाश में होते हैं लेकिन अस्थिरता से प्रभावित। हर्डिंग और ओवरकॉन्फिडेंस सामान्य हैं। भारतीय निवेशक अक्सर छोटे कैप शेयरों में जोखिम लेते हैं लेकिन भावनात्मक निर्णय से नुकसान उठाते हैं।

तुलना और प्रभावित कारक:

म्युचुअल फंड बनाम शेयर: म्युचुअल फंड में कम जोखिम, शेयर में अधिक नियंत्रण। कारक: उम्र, आय, शिक्षा, बाजार ज्ञान। युवा निवेशक जोखिम लेते हैं, जबकि वृद्ध सुरक्षित विकल्प चुनते हैं। व्यवहारिक पूर्वाग्रह डिस्पोजिशन इफेक्ट, लॉस एवर्शन आदि निवेशकों को प्रभावित करते हैं। इंडेक्स फंड बनाम सक्रिय फंड में निवेशक पूर्वाग्रह कम करने के लिए इंडेक्स चुनते हैं।

निष्कर्ष: (Conclusion)

म्युचुअल फंड और शेयर बाजार में निवेशक व्यवहार सफलता की कुंजी है। अध्ययन से पता चलता है कि भावनात्मक नियंत्रण, ज्ञान और विविधीकरण से निवेशक बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। सुझाव: नियमित निवेश, रिसर्च और पेशेवर सलाह लें। भविष्य में प्राथमिक सर्वेक्षण से और गहराई मिल सकती है। कुल मिलाकर, निवेशक व्यवहार को समझकर वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। अधिकांश भारतीय निवेशक (विशेषकर रिटेल निवेशक) जोखिम से बचने के लिए म्युचुअल फंड को प्राथमिकता देते हैं। एसईबीआई के आंकड़ों के अनुसार, लगभग 65% रिटेल निवेशक जोखिम से बचने वाले होते हैं और वे एसआईपी (सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) के माध्यम से नियमित निवेश पसंद करते हैं। यह व्यवहार विविधीकरण, पेशेवर प्रबंधन और बाजार अस्थिरता से सुरक्षा प्रदान करता है। हालांकि, निवेशक अक्सर उच्च फीस, नियंत्रण की कमी और भावनात्मक निर्णयों (जैसे बाजार गिरावट में रिडेम्पशन) के कारण फंड के पूर्ण रिटर्न का लाभ नहीं उठा पाते। अध्ययनों से पता चलता है कि इक्विटी फंड्स ने 18-19% औसत



रिटर्न दिए, लेकिन निवेशकों का वास्तविक रिटर्न 13-14% ही रहा, मुख्यतः व्यवहारिक गलतियों (performance chasing, panic selling) के कारण।

संदर्भ:(References)

1. भारतीय शेयर बाजार में निवेशक व्यवहार पर शैक्षणिक सर्वेक्षण - Reddit.
2. Investors Behavior Analysis with Reference to Performance of Indian Mutual Fund Market - SSRN.
3. "A STUDY ON INVESTORS' BEHAVIOR TOWARDS MUTUAL FUNDS" - IJRPR.
4. निवेशक के व्यवहार की अहमियत - Jagran.
5. म्यूचुअल फंड बनाम स्टॉक - Bajaj Finserv.
6. इंडेक्स फंड बनाम म्यूचुअल फंड - PersonalFN.
7. Mutual fund - Sanskriti IAS. फंड बनाम सक्रिय फंड में निवेशक पूर्वाग्रह कम करने के लिए इंडेक्स चुनते हैं।

